1

DASHRATH PRASAD.

मेरा नाम दशरथ प्रसाद है और हेहोआनंदपुर का रहने वाला हूँ। थाना - निर्मली, डिस्टीक - सुपौल, बिहार() इसके बाद मैंने, बचपन में तो हम पढ़े थे, ~~इसके बाद हम~~ और, इसके बाद हम, घर आते थे, जब टाइम मिलता था तब वॉलीबॉल, फुटबॉल यही सब खेलते थे। उसके बाद टाइम मिला, कभी छुट्टी हुआ तो भैंस भी चरा लेते थे। ही- ही- और उसके बाद - -

-- मैट्रिक कब किया आपने ?

मैट्रिक 1980 में किये थे। निर्मली सेंटर था हमारा, डगमारा हाईस्कूल था। डिस्टीक- सुपौल में पड़ता वो भी। पहले तो सहरसा था, अब सुपौल हो गया। 1980 में किये थे मैट्रिक पास। इन्टरमीडिएट में निर्मली एडमिशन करवाए थे और वहीं रहते थे। और वहाँ भी मैट्रिक पास किये थे तो होस्टल में ही रहते थे हम। वहीं पढ़ते थे ट्यूशन वगैरह।

-- गारजियन पूरा खर्चा देते थे ?

पूरा खर्च देता था। सिर्फ चार भाई थे, चार भाई में छोटा थे हम। मतलब हमारे पिताजी दो भाई थे न, उसमें उसका भी दो लड़का और दो भाई हमलोग थे। तो ज्वाइन्ट परिवार था उस समय तो सबसे ~~ज्यादा~~ छोटा हम ही थे, तो कहा ये पढ़ेगा ही चाहे जहाँ रहे हॉस्टल ले या ओ ले। जैसी उसको मर्जी वैसे पढ़े। तो होस्टल में ही रहते थे। कोई सर्विस में नहीं थे। परिवार में कोई भी सर्विस में नहीं थे।

सर्विस मिला था उस टाइम में। जो हमारे ताऊ के लड़के हैं बड़े वाला। उनको नौकरी मिला था स्पोर्टिंग में तो वे लोग बोला हम दूसरे की नौकरी नहीं करेंगे। उस समय अमीनअभा भी ज्यादा था। वह नौकरी किया नहीं। बाद में -- अपना दुकान किया घर पर वे था।

-- और दिल्ली आए ?

हाँ, हम आए। 1986 में। कलकत्ता गया थे, 1985 में कलकत्ता गया था। वहाँ गए तो मेरे एक चाचा रहता था। लिप्टन टी में था। तो मैं वहाँ नौकरी नहीं मिला। नौकरी का काफी प्रोबलेम था, इसलिए कि वहाँ - बंगाल में उसका सरकार जो है, वो बोलता था कि बंगाल के आदमी जो उसमें नौकरी करेंगे। जो पहले जिसका जो गया था इसके लिए ठीक था। बाद वाले को इधर - उधर वाले को रखता नहीं था। उसमें हो नहीं पाया हमारा। बोला था ड्राइवरी सीख लो पैसा हम देते हैं। हमलोग बोले ड्राइवरी नहीं सिखना ड्राइवरी सिखना होगा तो घर पर भी सीख लेंगे। फिर हमलोग वापिस आ गए घर। फिर वहाँ से एक साल घर पे रहे, तब तक हम इन्टरमीडिएट पास कर गए। इन्टरमीडिएट के परीक्षा देने के बाद में कलकत्ता गया था। इंगलिश में क्रास लग गया था। फिर उस समय स्पेशल Exam होता था। ठीक है- तो 82 में हम इन्टरमीडिएट किए हैं। और इस बीच में दोतीन-साल जो समय बच गया, घर पे रहे, कभी सोचते थे पढ़ें, कभी सोच रहे थे बहार जाय, इ सोचने में इतना टाइम

लग गया। फिर एक दिन ऐसे आया, फिर सोचा
चलो दिल्ली चलते हैं। एक आदमी ~~जानो~~ दिया का पता।
फिर वहाँ से दिल्ली आ गए। दिल्ली आने के बाद
कनाट प्लेस आए। वहाँ एक इन्जीनियर रहता है
हमलोगों के जान-पहचान का। हमारे पड़ोसी के
दरवाजे पर एक शिक्षक रहता है। उनके रिश्तेदार
रहता है यहाँ पर इन्जीनियर है। वो भी हमारे
गाँव के आसपास के हैं। हमारे गाँव में जो
प्राइमरी स्कूल है न, उसमें वो मास्टरी करता
था। फिर वहाँ आए, दो लड़के आए वहाँ से। उसके
बाद आने के बाद एक दिन रहे वहाँ पर।
एक दिन तो वो जो लड़का आया था न
उसको बोला फिलहाल तुम इस ~~बिल~~ बिल्डिंग
बन रहा था, कलकत्ता की एक कंपनी की,
33 मंजिल है वो सबसे बड़ा बील्डिंग है, कनाट
प्लेस में, उसी में वो इन्जीनियर हैं उसमें उसके
तो दूसरे दिन से ही काम पर लगा लिया, मेरे
को बोला ठीक है, आपको हम ~~फिलहाल~~ चौकीदारी
के लिए फिलहाल, मालवा लाएगा, साकेत में है,
कंपनी का एक गोदाम था, बोला वहाँ पर
आप रह जाओ फिलहाल, आपको 500 रुपया
देंगे। उस समय 414 रु० का स्केल था दिल्ली
में। गवर्मेन्ट का था। मेरे को बोला, आपको
500 रु० देंगे, आपको वहीं रहना पड़ेगा। और
जो माल आएगा यहाँ से जैसे सिमेंट कितने
ट्रक गया यहाँ से, कितने सरिया गया, कितने
बजरी गया, ये सब आपको नोट करके रखना है।
आप पढ़े-लिखे हो या आप मुंशी का काम करना।
मैं कहा ठीक है मैं कर लूँगा, मुझे एक दिन
भेज दिया, तीसरे दिन, फिर मैं वहाँ गया तो मैं
मैं कहा, मैं ये काम नहीं करूँगा, फिर मैं वापस
आ गया। फिर यहाँ ओखला का एड्रेस था

तो फिर मैं ओखला आके, तो बजे वहाँ से चला था, क्लाट ~~फल~~ प्लेस से, 433 न० की बस आती है, यहाँ, जन्तर मन्तर से, ओखला इन्डस्ट्रियल एरिया का, जब मैं यहाँ आया, फिर मैं उसके यहाँ गया खोज खाज के। फिर उसके यहाँ पहुँचने के बाद खाना-वाना खाया। बोले किधर-किधर आया आपलोग। हम बोले, किधर-इ-ह आए, नौकरी करने के लिए आए। है कहीं जुगाड़? बोला कि ठीक है हो जाएगा, और कौन है, एक उन्हीं का रिश्तेदार और था, हमसे भी नजदीकी वाला, बोला, वहीं पर एक लड़का था भैया उसको बुलाया। मुझे यहीं रोक लिया, फिर वो लड़का गया दूसरे दिन फिर उसके बाद वे अपने, जितने जान-पहचान वाले थे, उनको बोल दिया कि, उसको नौकरी के लिए व्यवस्था करो, और - - तीन दिन के बाद मुझे नौकरी लग गया। ओखला का। वो लेदर का था Tulsan Inspect, Pvt. Ltd. कम्पनी का नाम था, Y-36, ओखला, Phase-II, उसमें मैं लग गया। उसमें तम्बा-वम्बा डालके के लिए बोला, कहा, बोला पढ़ा-लिखा है, मैं कहा, हाँ पढ़ा हूँ, तो बोला ठीक है, आपको ऐसे काम देता हूँ, वहाँ जैसे लेदर का पार्ट वगैरह कटता है न, अलग-अलग पार्ट रहता है न, पहले तो इसमें पूरा पीस होता है, उसमें से काट-काट के मतलब अलग-अलग करके सारे कम्पोनेंट ज्वाइन्ट होता है, तो इसमें सारे में जैसे सीरीयल न० चाहिए, एक जगह का कम्पोनेंट एक जगह लगेगा, तभी वह मैचिंग होता है, इसलिए सब पे, जैसे एक पार्ट का है, पूरा पार्ट हो जिससे, उसपे एक न०

सारे पार्ट पर लिखना है, फिर दूसरे पार्ट का भी एक नं०, एक नं. का पूरा पार्ट, ऐ. एक जोड़ी बन गया, तो उसपे मुझे नम्बर-नम्बर डालने के लिए मुझसे ऐसे चलाते थे। शुरु में बहुत मेहनत करना पड़ा मुझे। वो कम्पनी खुली ही थी, स्टार्टिंग से हम तीन आदमी, दो हमारे डिस्ट्रीक से ही और एक सुपरवाइजर, एक मैनेजर, तीन-चार ही आदमी थे। फिर एक और आ गया बिहार के ही, तीन आदमी हम बिहार के हो गए जितने मशीन आता था बाहर से जितने पत्थर आता था, उठा के, पत्थर-उत्थर पर काम होता था, मैं उसे ठोकने वाला होता है न पत्थर, उसपे सारे उतार के, डेली कपड़ा पहन कर आते थे चुस्त हुआ और शाम को आते थे तो एकदम गन्दा। मशीन जितना भी ही अभी तीन आदमी हेल्परींग में लगे जो काम कहता था, वही काम करना पड़ता था फिर सारे मशीन उतारो, कपरा मारो सारे पे, झाड़ू लगाओ। सब काम किया स्टार्टिंग में। फिर उसके बाद लगे-लगे, धीरे-धीरे-धीरे, तीन महीना हो गया। फिर परमानेन्ट कर दिया उसमें। परमानेंट तो कर दिया, 414 रुपया स्केल तो था ही, जो सुपरवाइजर था उसका, हमलोग कटिंग डिपार्टमेंट में थे, फिर उसको झगड़ा हो गया, मैनेजर से, वो बोला चलो दूसरे जगह ले चलते हैं, फिर वहाँ से हमलोगों को बालहेरा हरियाणा ले के चला गया। उसका भी एगारह सौ था यहाँ, फिर पन्द्रह सौ कर दिया वहाँ पे। हमलोगों का 414 था, पाँच सौ रुपया कर दिया। तो यहाँ पर हम [illegible]

फिर वहाँ से, तीन चार दिनों तक तो कम्पनी की गाड़ी आती थी, छोटा वाला मेटाडोर था।

— — - क्या काम करते थे ?

हरियाणा में? वही काम, सुपरवाइजर बोला, अब तुम नम्बर-वम्बर छोड़ दो, अब तो तुम थोड़ा-थोड़ा जानने लगा। ऐसा करो तुम चेक-चाक करने लगो। चेकिंग करके जो मुझे देना था न नम्बर डाल के, वो काम अब तुम करो। तो क्या है कि एक ऊपर में लगता है, आ-- एक अन्दर में लगता है। अन्दर वाला लाइनिंग हो गया। तो लाइनिंग में मुझे बोलता, लाइनिंग पहले चेक करो। फिर तीन महीना तक लाइनिंग चेक कराया, फिर उसके बाद जूता-जूता का चेक करने लगा मैंरे से। वहीं पर जो रिस्ता दिया, फिर वहाँ से छै सौ हो गया, पाँच सौ में गए थे, फिर तीन चार महीना वहाँ पर किए, फिर वहाँ पर उसका झगड़ा हो गया। फिर वहाँ से आ गए नौएडा, नौएडा आ गए, सुरजीत सिंह बरनाला के भाई का कम्पनी था वहाँ पर, D-40, Sector-11 में, नोएडा, फिर वहाँ आ गए, उसका भी होगया बाइस सौ रुपया। और हमलोगों का सात सौ रुपया बढ़ाया था। छैसौ से सातसौ यहाँ का दिया। फिर हमारे गाँव का भी यहाँ रहता था, ये भी अच्छा हो गया, तीन महीने के अन्दर। अकेले यहाँ अच्छा भी नहीं लगता थो, वहाँ यू.पी. का भी था, बंगाल का भी था, छै आदमी को ले गया था वह। छे आदमी थे, एक गेस्ट हाउस ले लिया था, उसमें बोलता था सारे आदमी रहो, उसी में खाओ पीओ, उसी में रहो।

इसी में अपना रहते थे, कभी कबूतर पकड़के खा जाते थे, कभी कुछ कभी कुछ, कबूतर काफी था उसमें, फिर इसमें आए, इसमें दो साल तक रहे। तब तक हमारा पूरा आने के दो साल पूरा हो गया था। रहते तो दिल्ली में थे, लेकिन काम नोएडा में करते थे, यहाँ कंपनी का, यहाँ गोलचक्कर के पास कालकाडिपो है न, उधर से ऊपर आके एक बस खुलती थी कंपनी की, वहाँ कम्पनी में ले जाकर छोड़ देते थे। पैसा वैसा किसी को नहीं लगता था, कंपनी की तरफ से गाड़ी थी, क्योंकि आधे से ज्यादा स्टॉफ यहाँ दिल्ली से जाता था, तो उसी से जाते थे हमलोग। उसी रूम में रहते थे, वह लड़का तो पहले से रह ही रहा था। वह लड़का फिर दूसरे कंपनी में लग गया, फिर उसके बाद, दिवाली वही सात दिन का स्ट्राइक, वही जो 2008 में हुआ था सात दिन का, लेबर प्रोब्लम था। FBR, ?VDS का, तो कोई हाउस रेन्ट माँगता था, कि हाउस रेन्ट चाहिए, कोई कहता महँगाई भत्ता तो कोई ये ठेकेदारी प्रथा खत्म करो, जो गोवर्मेंट का मीनीमम वैज है, उसको लागू करो, इसके सारे यूनियन एक हो गया था, टाटली। एटक था, इंटेक था, सी-2 था, हिन्द मजदूर, चार पांच ~~एचएमएस~~ H. M. S. क्या ये भी होता है न, ये था सब, सारे यूनियन ही एक होगया था। कम्पनी में भी काफी इफेक्ट पड़ा था। काम बिल्कुल बन्द था तो, रोड पर आदमी नहीं निकलता था, ~~रैल~~ स्ट्राइक जैसे स्टार्ट हुआ था, कर्के कम्पनी टूट गया था, शीशा सारा तोड़ दिया था। उधर से निकलता था वही कम्पनी चल, लोगबाग हम, जैसे हमलोग निकलते थे न उधर से,

कि वो कम्पनी चल रहा है, तुमलोग आजाना तुमलोग चलाते हैं। मैं मत देखना कि ताला बाहर से मारा है तो अन्दर काम नहीं हो रहा है, कहते थे काम हो रहा है अन्दर में तुम मारो पत्थर, कुछ ऐसे हल्ला हुआ, फिर बन्द हा-हा-हा-। सब जानबूझ कर किए जो सात दिन तक चला, लेकिन कम्पनी उस समय सारा Payment दिया था, क्योंकि इसलिए सारा यूनियन एक हो गया था न। पुलिस भी खूब थी। पुलिस खाली ये शान्ति के लिए था, कि कोई तोड़-फोड़ न हो, कोई ऐसी घटना न हो कहीं पे। कोई आग ही न लगाए, इसके लिए था। लेकिन मजदूर यूनियन जो हो गया न एक उस पर मालिक का भी - -

- - - अच्छा धरना भी दिया गया ?

- घरना तो वही हो गया न एक। जैसे कालकाजी के अन्दर घुसो तो वहाँ पर बैनर-झंडा लगा हुआ है, मेन-मेन जो यूनियन का सारे हैं पाँच-दस आदमी बाके, उसके बाद बस चला ही नहीं कम्पनी। माहौल ही ऐसा बन गया जो सात दिन तक चला था। उसके बाद 88 तक हमने 26 तारीख को, सितम्बर-

- - - कुछ चाल नहीं हुआ ?

कुछ-कुछ हुआ था। कुछ-कुछ कम्पनी जो नहीं दे रहा था ग्रेड वो देने लगा।

बाँकी तो व्यवस्था है ही, अब तो, क्या अभी भी 50% से ज्यादा कम्पनी नहीं दे रहा था. वह पिछले की बात छोड़िए, अभी भी नहीं दे रहा है। कितने कम्पनी में अभी आइए, जो अभी कहते हैं, बाल- मजदूरी बन्द है। देखिये जाके, वहाँ पर 18 साल से कम उम्र का आदमी काम कर रहा है उसको ग्रेड नहीं दे रहा। महँगाई भत्ता नहीं दे रहा। क्या, दस-दस साल तक आदमी को हो गया है, अभी तक परमानेन्ट नहीं हुआ है ये सब थो उस समय का, ये सब था उस समय का, लेकिन इतना, कोई इतना ये सब नहीं हुआ। उसके बाद हमने उस कम्पनी को भी छोड़ दिया। और उसके बाद हमने 1988 में 26 दिसम्बर को, तो मूमु में ही खुला था ~~ताज ग्रुप का~~ टाटा वाले का ताज ताज जैन सूज कम्पनी लिमिटेड, उसमें 50% अर्मन शेयर था, ताज होटल फाइव स्टार वाले का था वो, तो हमारे दोस्त एक सिवान डिस्ट्रीक के रहते थे, वहीं हम दो साल तक रहे तो, हमें उसी कंपनी का इस्पैक्टर के रूप में लेटर मिला और उसी बेस में हमें वहाँ भी उसी पोस्ट पर मिला नौकरी, जो वहाँ काम कर रहे थे न उसी पोस्ट पर हमें रखा गया। और सीवान डिस्ट्रीक्ट वाले बोला चलो वहाँ चलो। उसका भाई एक गया था और मेरा दोस्त था न उसी का छोटा वाला भाई गया था, तो वहाँ से भी बंगाल के मैनेजर था, प्रोडक्शन मैनेजर, इसके साथ रहा, उसने बोला उसको जो उसको काफी नजदीक से जानता था। तो उसने बोला ठीक है तुम्हारे जान-पहचान का कोई है तो ले आओ। तो उसने मुझको बताया तब यहाँ मत करो

उस समय में क्या था कि जिस लाइन में हम
थे न, नौकरी काफी मिल रहा था, कंपनी
काफी खुल गया, टाटा वाला खोल दिया ताज
के नाम से, शिमको वाला खोल दिया बिड़ला
के नाम से, वहीं पे, तो तीन चार कम्पनी फोनेक्स
वाला खोल दिया, मिड ईस्ट शिप्स इंडिया
लिमिटेड खुल गया, पान- छे कम्पनी औ
थे उस समय काफी कम्पेटीशन में था, टाटा
बिड़ला तो खुला ही, हमारी कंपनी औ था वह
एक्सपोर्ट जोन के अन्दर में था, सुते. एन.इ.
पी. जी. एस. उसी में हमारी ~~कंपनी~~ फैक्ट्री है-
नोएडा एक्सपोर्ट प्रॉसिंग जोन, उसमें हमारी कम्पनी
थी 15-16 नम्बर प्लॉट है उसका। नाम अ
डेज कंपनी लिमिटेड के नाम से वह कम्पनी
खुला था। तो हमलोगों से एक महीना पहले
प्रोडक्शन चालू हो गया था वहाँ पर, जब
हम लोग पहुँचे थे न। तो हम 26 सितम्बर को
वहाँ पहुँचे थे। 26 सितम्बर को हमारा इन्टरव्यू
हो गया, ठीक है। और तीन अक्टूबर से हमारा
~~ज्वाइनिंग~~ एप्वाइन्टमेंट के लोगों और वो लोग
तीन अक्टूबर को अपना ज्वाइनिंग लेकर लेना
और ~~एक~~ एप्वाइन्टमेंट लेटर भी मिल जायेगा।
फिर हम यहाँ आए, यहाँ पर 30 को आके
रिजाइन लेटर लिख दिए, बोले हमारे कोई
~~एक~~ ऐसा प्रॉब्लेम हो गया। हम यहाँ नौकरी नहीं
करेंगे। वे बोले क्या हो गया चौधरी, तीन-
चार दिन पहले आए और काम कर रहा था।
हम बोले, ऐसी एक बात हो गया, हमारा
जॉब एक है, गवर्मेंट में नौकरी हो
गया, हम अकेले हैं, मुझे घर पे
रहना पड़ेगा। मैं झूठ बोला वहाँ पे,
कम्पनी सब में लगने के बाद आप उसके
दिल में आ गए- चार ये लड़का अच्छा

काम कर रहा है, फिर वो छोड़ने में दिक्कत करता है। आप छोड़ भी दिए, तो गवर्मेंट का जो रूल है, आप उसको एक महीना पहले सूचित करो, ताकि वो आदमी व्यवस्था करेगा, जो भी नियम है, इसी प्रकार एक महीना कराकर नहीं जाते तो आपको नोटिस दे देगा। तो मैंने इसी वजह से सोचा ये प्रोब्लम बन जाएँगे, मैनेजर टाटा से आया था उसी समय और जो सुपरवाइजर था, वह था आगरा का वह हमको बहुत मानता था। चतुर्वेदी था, वो भी बंगाल के ही था। बहुत अच्छे था। और हमें काफी मानता था, तो उसने बोला था, तुमको पैसा ही बढ़वाने का है तो मैं बढ़वा दूंगा। ~~मैं कहा नहीं पैसा का नहीं~~। हम कहे पैसा का नहीं, तब तक हम डेढ़ साल तक लगे थे और पैसा बढ़कर नौ सौ हो गया था, और वहाँ पर गए इन्टरव्यू देने, वहाँ पर बारह सौ हो गया। और कम्पनी भी टाटा की, सारे कुछ कम्पनी काफी अच्छा था। तो हमने वहाँ के माहौल को देखे तो हमने तीन साल तक यहाँ से साइकिल चलाए के गोविन्दपुरी से, तीस किलोमीटर गए। चार साल तक गए नोएडा, बस चलती ही नहीं थी, रोड बनी ही नहीं तो कहाँ से चलेगी। कच्ची रोड था, अब तो रोड बन गया सबकुछ, यहाँ एक-डेढ़ घंटा लगता डेली सुबह में साइकिल चलाते थे और डेढ़ घंटा शाम को, तीन घंटा मेहनत करते थे। हालत इतना बिगड़ जाता था ऐसा लगता था, दस-पन्द्रह मिनट के पनी छोड़ देता साइकिल वाले को। उस तरफ गंदा नाला है न, हमलोग उधर से आते थे ~~साइकिल चलाकर~~ घुमकर तो

बाँध है न उसी से जाते थे। और रोड घूमकर आगे थे, जहाँ पर लिखा है गौतमबुद्ध नगर वही, मयूर ~~विहार~~ विहार से बस आती, गौतमबुद्ध नगर लिखा है, जहाँ से नोएडा इन्टर करता है, वहाँ से फिर हमलोग रेलवे क्रास करके आते थे, कुछ रोड ही नहीं था, गंदा नाला और था वहाँ कहाँ था पुल, पुल बनी ही नहीं थी, फिर जब पुल बना, पुल बनने के बाद उसने ऐसे दे दिया था लोहा का, तो दो आदमी-तीन आदमी करके एक साइकिल पार करते थे। फिर कई साल के बाद पुल बना। अब तो complete ही हो गया, सरिता विहार वाला पुल हो गया, हमलोग बदरपुर खादर गाँव से होकर आते थे। काफी भयानक है, एक-एक घंटा उसमें लग जाता था। ये रोड नहीं बना था सरिता विहार वाला, रोड भी नहीं बना था। वहाँ एपोलो - अपोलो कुछ भी नहीं बना। सब बिल्कुल नील था।

— — अच्छा एक बात बताइए, जब आपको यहाँ इतना problem, फेस करना पड़ता था, काम करने के लिए, जाने के लिए ऑफिस में, तो आप बिहार क्यों नहीं वापस हुए ?

बिहार में कहाँ नौकरी मिलता है। बिहार में नौकरी के इतना प्रोब्लेम है आपको पता ही है। वहाँ तो कह रहा है, भगवान मिल जाएगा जल्दी, लेकिन नौकरी नहीं मिलेगा। कहता है वहाँ तपस्या करते है, भगवान मिल जाएगा, लेकिन नौकरी नहीं मिलेगा।

उसी तब सोचकर हम इधर आए, इधर आने के बाद हम संघर्ष करके मिहनत किए, काफी अपने जीवन में जो घटनाएँ हुई जिसको लड़ते झगड़ते अपने जीवन में कामयाबी तक पहुँचे तो फिर बिहार लौटने का सवाल ही नहीं उठता है। और - - बिहार लौटेंगे, अपनी जन्मभूमि है तो अब सबकुछ करके ही लौटेंगे। ये सोचे हैं। इसके बाद हम यहाँ पर लगे, लगने के बाद हमने क्वालिटी कंट्रोल में, कुछ दिन हमने इंस्पेक्टर के पोस्ट पर रहे। उसके बाद में क्वालिटी कंट्रोल में दे दिया टाटा। फिर क्वालिटी कंट्रोल में जाने के बाद हमें वहाँ से हटा दिया - - स्टोर में दे दिया। बोला स्टोर में चले आओ। फिर हमने स्टोर में चले गए। स्टोर में जाने के बाद एक - - एक डेढ़ साल हमने स्टोर में किए। 1994 में वहाँ से हटाकर हमें फिल्ड का काम दे दिया। आप आओ और परचेज डिपार्ट में ~~दे दिया~~ हमें डाल दिया। आ - - परचेज डिपार्ट में बाहर का दे दिया शाउट्स। जैसे जलंधर जाना है, कानपुर जाना है, कलकत्ता जाना है। ऐसे जगह हमें भेजता था। दस-दस दिन, पंद्रह दिन, एक-एक ~~महीना~~ महीना तक घर से हम बाहर रहते थे। कंपनी के तरफ से सारी ~~फैस~~ फैसिलिटियाँ थीं, बुक करो होटल में रहो। पैसाबाद भी जाना है, लोडिंग भी जाना है, वो भी कम्पनी ही किया करेगे। ट्रैवली, आने - जाने, खाने-पीने, रहने, जो भी हो सारे कम्पनी देगा। एक-एक पैसा, सैलरी तो वैसे है ही पड़ा हुआ। बाकी ये कम्पनी जो गए थे, टाटा वाले में, इसके सारे ~~ग~~ गोवरमेंट का सरकुलर, जो भी बनता है हाउस रेन्ट, साल में एग्रीमेंट

3

काफी दिन तक रहे ~~और~~ तीन साल तका यूनियन हो गया, इसमें भी एक तीन महीना स्ट्राइक रहा था। उस समय भी हमलोगों को काफी परेशानी हुआ था, मैनेजमेंट आखिर में नहीं माना, अपनी जिद्द पर अड़ी रही, यूनियन फिर टूट गया। ये सब काफी तरह की बातें सब हुआ, फिर ये लास्ट में अभी, सिस्टम में ऐसा है कि, गौवमेंट का जो है वोलन्टीयर रीटायरमेंट VRS, उसमें बोला, ~~कंपनी~~ गौवर्मेंट की चौदह करोड़ घाटे में कंपनी चल रही है। चौदह करोड़ घाटे में कंपनी फिलहाल चल रही है। ये काफी दिनों से चल रहा था। काफी दिनों से चलने के बाद पहले सात करोड़ घाटे में चल रही थी, स्टार्टिंग में सात करोड़ घाटे में चल रही थी, तो इसमें कंपनी - वर्कर का कुछ डिमान्ड था जो यूनियन वाले हुआ था तीन महीना स्ट्राइक हुआ था, ये हुआ था 1998 में।

-- तीन ~~क~~ महीने का स्ट्राइक ?

तीन महीने का स्ट्राइक 98 में हुआ था। स्ट्राइक हुआ तो कुछ आदमी छंट गया। चार-पाँच आदमी हमलोग रह गए, बोला था तुमलोग ऐसा करो, चार-पाँच आदमी के लिए अगर कंपनी बंद जाएगी यहाँ से तो काफी, सोलह-सत्रह हजार का महीना लगता है। इससे अच्छा कि आपलोग पैसा ले लो। तो दे दो, स्टार्टिंग में मतलब चार सौ रुपया

~~हमलोगों के हिसाब बोला कि कन्वेंयन्ट के लिए लिया।~~ बोला कि यहाँ से 37 सेक्टर, और 37 सेक्टर से नोएडा वाले के लिए एक बुस, बकैट का था है। तो हमलोग यहाँ से 37 तक जाते थे। सरिता विहार तक पैदल गए और वहाँ से 4 का टिकट लिए, पहले तो दो ही था। अब चार हुआ है, पिछले साल से। पिछले डेढ़ साल से करीब हुआ है नहीं तो पहले दो ही रुपया लगता था, तो उस समय पहले हमलोग वहाँ तक जाते थे, और उधर से इधर का उधर का दू-दूनो चार-चार रुपया पर डे हो गया। ~~तीस चौक~~ सा पचीस चौक सौ रुपया, हमलोग भी बोले, हमलोगों का फायदा हो ही रहा है और कंपनी तक बोलने लगा कि या ऐसा है, टाटा वाले हैं रखा जाएगा, बोलेगा भाइ, पाँच आदमी के लिए तुमने इतना बड़ा बस लगा रखा है तो तु लोगों का भी कुछ फायदा हो जाएगा। हमलोग सोचे चलो कंपनी काफी घाटे में चल रहा था, तो हमलोग बोले ठीक है, उनका भी अच्छा हो जाएगा और हमारा भी अच्छा हो जाएगा। तीन चार सौ रुपया हमलोगों को भी दिखाई दे रहा था। तो हमलोग आ गए बाद में। तो इसके बाद धीरे-२ जैसे बढ़ते गया, तो छै सौ तक हो गया था, फिलहाल छै सौ रुपया हो गया था। जैसे किराया बढ़ता था तो, वो भी बढ़ा देता था। कहने की बात नहीं भी उसमें तो अब छै सौ तक

कीलिया हो गया। बोला, अब भी बैठेगा तो कुछ बचाते रहेंगे। पिरमेन्ट तो नहीं बनता है।

बच्चे हैं, यहाँ पर पढ़ता है। किया बीबी बच्चे अपने हैं। तो उसके हिसाब से क्या बचेगा इतनी महंगाई में। महँगाई इतना है, चार हजार रुपया कंपनी दे रहा है इसमें क्या बचेगा। जब फिल्ड में काम किए तो थोड़ा बहुत बचता था। उस समय अपने मेहनत से जो उसे समय बनाए। कंपनी ने वो ऑप्सन रखा, जिसमें पहला है - जो 40 साल वाले हैं वो या जिसका दस साल नौकरी continue हो गया। तो इसमें 70-80 आदमी करीब दस साल वाले में था। ठीक है, सत्तर - ब - बहत्तर - पचहत्तर आदमी करीब बचा था। तो सत्तर आदमी ने हिसाब से लिया। जो कंपनी का, वो गोवरनमेंट का जो आया था न, 45 days था या 50 days था, जो भी था, तो कम्पनी ने 50 days के हिसाब से, पर - पर इया से 50 days ब देके, और सबको नोटीस लगा दिया कि, जो तो आपलोग ले लो। उस समय 14 करोड़ घाटे में चल रहा था कम्पनी, माने कंपनी को तो ओवर बेट कम करना है कहा देखो आपलोग ले लोगे तो ठीक है, नहीं तो बाद में दिक्कत हो जाएगी आपलोगों के लिए, अभी से स्वेच्छा से, उसने नोटिस लगाया था, जो भी, कंपनी का यही नियम था, गोवरमेंट से चलता था।

जो भी बात होती थी गोवरमेंट के नियम से
चलता था, बोला, बाद में कम्पनी अगर एक[illegible]
लेगा, इससे अच्छा तो, कुछ लोग अपने घर
भी गया और लोगों को फायदा भी दिखाई
दिया, पच्चास दिन तो दे रहा, Government
ने पच्चास दिन दिया रहा, हमें भी 50 दिन
मिल रहा। तो बाद में कुछ लोग बोला
हमें सत्तर चाहिए, कोई बोल रहा था
तीन महीने चाहिए साल में, एक साल में
तो ऐसे करते-करते में कुछ आदमी
छूट गए। जिसको पैसा कुछ ज्यादा
हो रहा था, कोई नेपाल का था,
कोई बिहार का था, हर State
से उसमें लिया था. जब स्टार्ट हुआ था
कम्पनी, तो कलकत्ता का, राजस्थान
का, हरियाणा का, हिमाचल का, हर
स्टेट का आदमी लिया था जैसे
कालेज जाके बैठा। चन्डीगढ़ जाके
बैठा, पंजाब का, हरियाणा का दोनों
आदमी भी वहीं इन्टरव्यू ले लिया,
वैकेन्सी निकाल दिया कि इस स्टेट
से इतना बेरोजगार आदमी चाहिए।
हमारे कंपनी का स्टार्टिंग में भी था कि बेरोजगार
आदमी उसमें इतना चाहिए, तो उसमें जैसे
हमने जैसे इतना आदमी लिया है, देखे कि
टाटा कंपनी में vacancy है तो दस, दस
लड़के लेना है. कंपनी को, कंपनी निकालता
था कि उसे सौ लेना है, तो उसके पांच
गुना आदमी चला गया, उसमें चुनते २
कंपनी को जो आदमी अच्छा लगता था,
तो उसमें से दस लड़का ले लिया, दस
लेके अपने कंपनी चला गया। उसको
तो सारे वही, सारे सुविधा वही,
उसने [illegible] ले लिया था।

18

उसमें क्या है, हर स्टेट से लेने में कि यूनियन का कंपनी को खतरा बन रहा है कि कोई एक जैसे कि बिहार का है रहेगा या बंगाल का ही रहेगा, लेकिन उस चीज करते करते में भी 70% बिहार का ही गया, कितने को हटाते-हटाते, 70% बिहार का ही गया। और यूनियन में करीब काफी बिहार के निकल गए। तो - उस समय तो रह - तब भी 50% रह ही गया था बिहार का, कितना भी निकालो न, फिर भी ज्यादा जनसंख्या बिहार का ही था, उसको कितना भी निकालेगा तो बिहार का बच ही जाएगा। तो ये है, छोड़ने का तो कंपनी का दबाव आ गया, दबाव बन गया न इनलोगों पर, सोचे बाउर्स एकदम लेगा। उस समय तो कंपनी बोला, बाउर्स को बोला, आपलोग नहीं देंगे तो वरना हमें कोई एक्शन लेना पड़ेगा। तो हमलोग, हम कुछ नहीं देंगे तो हमलोग सोचे या बेकार में नुकसान हो जाएगा। इससे बेस्ट है कि अपना स्वेच्छा से कम्पनी दे रहा है, तो कंपनी स्वेच्छा से देने के बजाय, हमें लोगों को क्या किया कि जो लड़के अच्छे थे उनके नजर में, उनको बोला ठीक है आपलोग दो-तीन महीने के पगार ले लो जो आदमी पैसे ले रहा, आपलोग ऐसे दिन और पगार ले लो, पर भी इस पैसे से तो 55 दिन के लिए, इसतरह से तीन चार लड़के को, करके अपना काम बना लिया।

--- तो अभी क्या कर रहे हैं आप?

अभी फिलहाल छै महीना से बैठा हूँ, क्योंकि पी. एफ. वाले ओ फार्म भरा गया था न, वो 89 में भरा गया था, कोई अपने बाप का नाम तो गलत लिखाएगा नहीं और हमारे पिताजी का नाम था गासू प्रसाद, और हमारा नाम था दशरथ प्रसाद, उसमें -- उसमें क्या हुआ कि शारदा प्रसाद लिख दिया था, पिताजी का नाम, नेहरु प्लेस में पी. एफ. ऑफिस है, मैं गया था वहाँ, तो वो गड़बड़ हो गया, दस-पन्द्रह दिनों से इसी चक्कर में लगा हुआ हूँ। कि अगर नौकरी भी कहीं पकड़ूँ, फिलहाल मुझे इस साल तो रहना है। प्रोब्लेम ऐसे है कि इस साल मुझे रहना पड़ेगा दिल्ली में। तो -- मैं सोच रहा हूँ कि पहले ये सब काम कर लूँ, उसके बाद नौकरी तो कहीं न कहीं करना ही है। रोटी-पानी भी चल जाए तो बहुत है।

- ये बताए नहीं कि शादी के पहले का लाइफ और शादी के बाद का लाइफ में क्या डिफिरेन्स आया?

शादी के बाद, थोड़ा बहुत प्रोब्लेम हो ही जाता है आदमी को, अब ये है कि पहले एक आदमी का जिम्मेदारी था अब तीन आदमी का जिम्मेदारी संभालना पड़ता है महंगाई इतना हो गया कि आप लोगों को पता है ही।

-- कितने बच्चे हैं?

तीन बच्चे हैं- एक तो प्यार पर रहता है, अभी वह रहा है भाई के पास रहता है। मेरा बड़ा वाला भाई-भाभी साथ रहते हैं तो बच्चे हैं यहाँ पे, यही दिल्ली में हुआ है, दोनों। और मैं 95 से अपनी ~~family~~ के साथ ही रह रहा हूँ।

- - - शादी Arrange Marriage है या Love marriage?

- Arrange Marriage। ~~देखिए~~ हमलोग देहात के हैं कोई शौक तो है नहीं। हमें अपने रीति-रिवाज से चलना पड़ता है)

- - - कोई तो अलग है न, रीति-रिवाज को भी maintain कर रहे हैं, साइड में और कोई हो?

तो हमारे यहाँ में नहीं था। जिस समय हमारा शादी हुआ, उस समय कोई ऐसा नहीं था। हाँ और हमलोग ऐसे परिवार के नहीं थे। हमें समाज के रीति-रिवाजों के साथ चलना पड़ा।

- - - एक मिनट, आप मनोरंजन कैसे करते हैं खाली वक्त में?

खाली वक्त में तो समय कहाँ मिलता है अब जैसे हम जितना दिन नौकरी किए, समय ही नहीं मिला हमें। बस सुबह सात बजे हम निकलते थे जो कि चार बजे वहाँ से छुट्टी होती थी। उसके बाद थोड़ा बहुत-सब्जी लाए फिर टी.वी. देखते थे अपना मनोरंजन के लिए केबल लगा हुआ है उसमें जो चैनल हुआ देखते थे।

- कहीं घूमने नहीं गए ?

हाँ, गए। कई जगह गए।

- बच्चे भी साथ में होते हैं?

हाँ, बच्चे साथ में होते हैं।

- आप अभी तक क्या सोचे, आपको फिर वापस बिहार जाना है या दिल्ली में ही रहना है, कुछ तो होगा, जो एक सपना होता है, जिन्दगी में।

सपना है। सपना तो बहुत है, लेकिन उतना ही तभी तो। लेकिन फिलहाल जो है, उसमें बिहार लौटने का मकसद ये है, जो अभी यहां पे, एक तो ~~यहां~~ यहाँ की ~~सो~~ society को, society तो ठीक है, फिलहाल हमलोगों का जो सोसाइटी है यहां का। क्योंकि यहाँ पे हमलोग ये नहीं समझ रहे हैं, कि बिहार में नहीं हैं। हमारे यहाँ पे, एक बहु रहती है, तीन-चार भाई रहते हैं, भतीजा रहते हैं, और तीन चार कमरे हैं यहाँ पे, कम से कम तीस-पैंतीस आदमी यहाँ रहते हैं; तो हमलोग बिहार में यहां में कोई फर्क नही समझते हैं।

- यहाँ पर आप कहां रहते हैं?

यहाँ तो हम इन्दिरा कल्याण विहार में रहते हैं। ओखला फेज-2 में। यहां तो हमलोग दूसरे से वास्ता नहीं रखते हैं। दूसरे से इसलिए वास्ता नहीं रखते हैं, जो यहाँ पर हैं ~~अ~~ थोड़ा इधर-उधर वाले आदमी।

आपस में ही मिलजुल कर रहते हैं। दो-चार जो इन लिए उनका भी, हम भी कह दिए। यहाँ की जगह - - - वो अपने आप depend करता है जैसे बनाइए, वैसे बनता है है, यहाँ पे, ऐसी बात नहीं है, लोग थोड़ा-सा स्वभाव भी है, सही भी है, लेकिन हमलोग उस सब में नहीं रहते हैं हमलोग न तो किसी से अपने घर में रहो, किसी से लड़ाई न झगड़ा, कुछ ऐसी बात नहीं है अपने जो दस-पंद्रह आदमी हैं, उसी के साथ अपना खाना-पीना, उठना-उठना जो भी है, दुःख दर्द में हम हैं, हम भी उसके साथ होते हैं वह भी हमारे साथ देते हैं।

— — अपना घर है ?

अपना है अपना खरीदे थे हम। खरीद के बनाए। एक भी डर नहीं, जो भी है अपने बल पर

— — आगे क्या सोच रहे हैं ?

बताए नहीं, जिस समय हमलोग आए थे, दिल्ली में, उस समय हम अपने गाँव के एक दो आदमी आए। जब दो साल का हुआ, मतलब जब दो साल हुआ हमें यहाँ आए हुए, तो जो हमारा साथी आया था वह वापस चला गया था। और हमारे आने के बाद, कम से कम 50-60 आदमी आए। और सब अपना ऐसा नहीं कि मैं चार हजार रुपया कमा रहा हूँ। वे दो ही हजार कमा रहे थे कोई दो हजार। भी कमा रहा है, कोई पाँच हजार भी।

वह सात हजार भी कमा रहे हैं। इस तरह से हमारे भतीजा भी, इन्टरमीडिएट दो-दो भतीजा पास किया, बोला कि मैं नहीं पढ़ूँगा, I.Sc. वे दोनों भी पास करके फिस्ट डिवीज़न से पास किया, वहीं हॉस्टल में रहता था, बोला कि मैं नहीं पढ़ूँगा, फिर उनलोगों को भी मैं लाया, बोला मैं दिल्ली आऊँगा। मैं बोला चलो, मैंने उसको बोला कि क्यों दिल्ली क्यों आओगे, घर पर पढ़ो तुमलोग, जब guardian खर्चा दे रहे हैं- बोला कि नहीं पढ़ेंगे हमलोग, पढ़ने से यहाँ बिहार में नौकरी होती नहीं है। ~~फिर~~ फिर वही बीमारी आगई नौकरी वाली। फिर उनलोगों को लाए। फिर ये लोग टेलीविजन के लाइन में घुसे, तो दोनों भतीजा एक ही कम्पनी में लगा, तो आज दोनों फोरमैन हैं और अच्छे पैसा कमा रहे हैं, किसी का 5500 है किसी का 5000 है, मैं तो वहीं रह गया। ~~उनलोगों को~~ मेरे को ग्रुप अच्छा मिला तो उनलोगों को ग्रुप अच्छा नहीं मिला। लेकिन पैसा तो अच्छा मिलता है, कम्पनी उनलोगों का है, अपना तो नहीं है, लेकिन पैसा सही नहीं है। फिर और दो भतीजा है, फिर गाँव का तो लगातार आता ही रहा। फिर अब गाँव से कुछ आए तो अपने मौसी का लड़का को लेके आए, अपने भाई को ले आए, अपने साला को ले आए। इस तरह से बढ़ते गया। बढ़ते-बढ़ते अभी, पचास-साठ आदमी हो गया।

- आगे आपने क्या सोचा, बिहार वापस [illegible] या दिल्ली में ही रहियेगा?

अभी जो फिलहाल, जिस तरह का नौकरी मैं चाहता था, वो मिलना मुश्किल है और मैं ये सोच रहा हूँ कि दो-ढाई-तीन हजार की नौकरी मैं अगर कहीं चाहता फिलहाल। और ये सोच रहा हूँ कि यहाँ से अच्छा अब अपने घर पे ही होगा। मैं सोच रहा हूँ, घर पे ही जाकर कोई न कोई काम करूँ। जो कम्पनी से पैसा मिला है, उसी से कुछ कर सकता हूँ।